भगत रविदास – सबद २२

चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो स्रवन बानी सुजसु पूरि राखउ ॥

रागु धनासरी, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ६९४

चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो स्रवन बानी सुजसु पूरि राखउ ॥
मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ रसन अंमृत राम नाम भाखउ ॥१॥
मेरी प्रीति गोबिंद सिउ जिनि घटै ॥
मै तउ मोलि महगी लई जीअ सटै ॥१॥ रहाउ ॥
साधसंगति बिना भाउ नही ऊपजै भाव बिनु भगति नही होइ तेरी ॥
कहै रविदासु इक बेनती हरि सिउ पैज राखहु राजा राम मेरी ॥२॥२॥

सार: एकत्व को पाने और उसका अनुभव करने के लिए, गहरे साहस के साथ अपने अहं का त्याग करना होता है चाहे कितनी भी चुनौतियाँ क्यों न हों, ताकि सभी के बीच एकता की गहरी समझ बनी रहे। इस समर्पण का मतलब है व्यक्तिगत गर्व व पहचान और शक्ति पाने की आकांक्षा को एक तरफ रखना, यह समझना कि सद्भाव के लिए स्वार्थ के काम करने के बजाय सामूहिक भलाई को प्राथमिकता देना आवश्यक है। निस्वार्थता की इसी प्रक्रिया से हम एक अधिक एकीकृत समाज का निर्माण और संरक्षण कर सकते हैं।

चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो स्रवन बानी सुजसु पूरि राखउ ॥
चित्त चेतना पर मनन करता है, नेत्र देखते हैं और कान दिव्य वाणी को ग्रहण करते हैं। यह सब गहन प्रशंसा और स्पष्टता को जन्म देता है। इंद्रियों और अंतःचेतना का यह सामंजस्य बाहरी अनुभवों को विवेक से छानता है और बिखरी हुई अनुभूतियों को समझ में बदल देता है।

मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ रसन अंमृत राम नाम भाखउ ॥१॥
मन को मधुमक्खी के समान विकसित करो, हृदय में विनम्रता को पोषित करो और उस अमृत-सार को अभिव्यक्त करो जो सर्वव्यापकता को प्रतिबिंबित करता है। यह एकाग्रता की अवस्था का संकेत देता है जहाँ मन वर्तमान क्षण की मधुरता को आत्मसात करता है। (१)

मेरी प्रीति गोबिंद सिउ जिनि घटै ॥
यदि सर्वव्यापी चेतना के साथ मेरा संबंध कभी कमजोर पड़ जाए तब यह सावधान रहने और इस महत्वपूर्ण संबंध से भटकने से बचने के लिए एक अनुस्मारक के रूप में काम करता है।

मै तउ मोलि महगी लई जीअ सटै ॥१॥ रहाउ ॥
मैं इस संबंध को अपने पूरे अस्तित्व की ऊंची क़ीमत पर भी प्राप्त करने को तैयार हूँ। यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि एकत्व की प्राप्ति एवं अनुभूति बनाए रखने के लिए अहंकार का पूर्ण त्याग आवश्यक है। (१)(विराम)

साधसंगति बिना भाउ नही ऊपजै भाव बिनु भगति नही होइ तेरी ॥
ज्ञानी की संगति के बिना प्रेरणा उत्पन्न नहीं होती, नेक-भाव के बिना भक्ति संभव नहीं। यह एक सहायक वातावरण की ओर इशारा करता है जो परिवर्तन के लिए आवश्यक विवेक को पोषित करता है।

कहै रविदासु इक बेनती हरि सिउ पैज राखहु राजा राम मेरी ॥२॥२॥
रविदास कहते हैं कि सर्वव्यापी चेतना से उनकी एक ही प्रार्थना है कि वह उनकी आध्यात्मिक मर्यादा और अखंडता की रक्षा करें। यह प्रार्थना एकत्व के प्रति गहन श्रद्धा और उसे बनाए रखने की प्रतिबद्धता को व्यक्त करती है। (२)(२)

तत्त्व: भक्त रविदास रूपकों के माध्यम से सजग और केंद्रित विवेक को विकसित करने का आग्रह करते हैं। वह सलाह देते हैं कि हम मधुमक्खी की तरह ध्यान केंद्रित करें जो फूलों से मधुर रस संचित

करती है। यह उदाहरण हमें हर पल के पोषक पहलुओं की सराहना करने के लिए प्रेरित करता है। वह हमारे मन में विनम्रता की स्थापना के महत्व पर ज़ोर देते हैं जिससे हम अपने उच्चतर स्वरूप से जुड़ पाते हैं और जीवन में व्याप्त उस सर्वव्यापी उपस्थिति को पहचान पाते हैं। ध्यान की यह गहन एकाग्रता दैनिक साधारण अनुभवों को आंतरिक पोषण में बदल देती है और हर वस्तु के साथ एक गहरा जुड़ाव बना देती है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com